मंचीय कविता की परंपरा – दो

डॉ. गोविन्द प्रसाद वर्मा
(सहायक आचार्य)
हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी(बिहार)- 845401
Email: govindprasadverma@mgcub.ac.in

स्नातकोत्तर हिंदी, द्वितीय सेमेस्टर
प्रश्नपत्र: लोकप्रिय साहित्य और संस्कृति (HIND 4018)

विषय-सूची

- स्वातंत्र्योत्तर मंचीय कविता की परंपरा
  - सन् 1947 ई. से 1962 ई. तक
  - सन् 1962 ई. से 1975 ई. तक
  - सन् 1975 ई. से 2000 ई. तक
  - इक्कीसवीं शताब्दी की मंचीय कविता
- निष्कर्ष
- संदर्भ-ग्रंथ-सूची

- **स्वातंत्र्योत्तर मंचीय कविता**

- स्वाधीनता का स्वागत और शहीदों को श्रद्धांजलि
- आधुनिक संचार माध्यम और कवि-सम्मेलन
- हिंदी की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठा
- आजादी के बाद के प्रमुख मंचीय कवि

- सन् 1947 ई. से 1962 ई. तक

- स्वदेशी शासन और सुराज का स्वप्न
- हिंदी काव्य-मंच और वीर काव्य का आधुनिकीकरण
- मंचीय कविता और 'राजेश स्कूल'

- **सन् 1947 ई. से 1962 ई. तक ...**

➢ **राजनीतिक और सामाजिक असंतोष –**

ऊपर पूँजीवादी समाज / नीचे शोषित जनता का स्वर

तुम आँखें ऊपर कर चलते / मिट्टी जाती है इधर खिसक

इस तरह प्रतिक्रिया और क्रांति / दोनों के बीच त्रिशंकु बने

तुम बना मिटाया करते हो / अपनी आशाओं के खंडहर

- शिवमंगल सिंह 'सुमन'

- सन् 1947 ई. से 1962 ई. तक ...

- राष्ट्रीय - अंतर्राष्ट्रीय –

तंग - चुस्त 'परिधान' पर क्यों सिकोड़ते नाक ?

चल निकली इंग्लैंड में 'टापलेस' पोशाक |

कहँ 'काका' यह कलियुगजी का चमत्कार है,

ले पाश्चात्य ! सुंदरी ! तुमको नमस्कार ||

- काका हाथरसी

- सन् 1962 ई. से 1975 ई. तक

- भारत – चीन युद्ध और वीर कवि सम्मेलन
- मंचीय कविता : व्यावसायिकता और गुटबंदी
- साहित्यिक दरिद्रता : तुकबंदियाँ और अश्लीलता
- लोकप्रिय कविता और गंभीर कविता : दो रास्ते

- सन् 1962 ई. से 1975 ई. तक ...

- कवि-सम्मेलन : श्रृंगार और हास्य-व्यंग्य -

तन भींगा, मन भींगा, कण – कण तृण-तृण भींगा

देहरी, द्वार, आँगन, उपवन, त्रिभुवन भींगा

जब तक मैं दीप जलाऊँ कुटिया के द्वार

तब तक बरसात मचाता सावन आ पहुँचा |

- गोपालदास नीरज

- सन् 1975 ई. से 2000 ई. तक

- स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति और समझौता
- निर्भय कवि बाबा नागार्जुन –

‘इंदू जी, क्या हुआ है आपको,भूल गयी हैं बाप को’

‘खड़ी हो गई चांपकर कंकालों की हूक,

नभ में विपुल विराट-सी शासन की बंदूक |’

- नागार्जुन

- सन् 1975 ई. से 2000 ई. तक ...

- **सांस्कृतिक चित्रण -**

ई भक्ति के रंग में रंगल गाँव देखा |

घरम में करम में सनल गाँव देखा |

अगल में बगल में सगल गाँव देखा |

अमावसा नहाये चलल गाँव देखा |

- कैलाश गौतम

- सन् 1975 ई. से 2000 ई. तक ...

➢ **प्रशासनिक भष्टाचार -**

कचहरी की महिमा निराली है बेटे

कचहरी वकीलों की थाली है बेटे

पुलिस के लिए छोटी शाली है बेटे

यहाँ पैरवी अब दलाली है बेटे |

- कैलाश गौतम

- सन् 1975 ई. से 2000 ई. तक ...

➢ राजनीतिक भष्टाचार -

जितने हरामखोर थे कुर्बों – जवार में |

प्रधान बनकर आ गये अगली कतार में |

- अदम गोंडवी

नेताओं ने गांधी की टोपी बेंच दी / लेखकों ने प्रेमचंद की कलम तोड़ दी

- नीरज

- सन् 1975 ई. से 2000 ई. तक ...

➢ **गीत और गज़ल की नयी दुनिया -**

हो गयी है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए।

इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

- दुष्यंत कुमार

- **इक्कीसवीं शताब्दी की मंचीय कविता**

- **नई तकनीक : कवि-सम्मेलन का बदलता स्वरूप**
- **नये कवि नयी विषय – वस्तु**
- **21 वीं शताब्दी के प्रमुख मंचीय हस्ताक्षर**

- **इक्कीसवीं शताब्दी की मंचीय कविता ...**

किसी को घर मिला हिस्से में या कोई दुकां आई |

मैं घर में सबसे छोटा था मेरे हिस्से में माँ आई |

- मुनव्वर राणा

❖ निष्कर्ष

- हिंदी राजभाषा के रूप में स्वीकृति और हिंदी का अखिल भारतीय स्वरूप
- 'सुराज' स्वप्न और राजनीतिक असंतोष
- आजादी के बाद की मंचीय कविता में वीर रस की प्रचुरता
- समय के साथ धीरे-धीरे कवि-सम्मेलन का गुणात्मक अवमूल्यन
- नई सदी में कवि – सम्मेलन का नया रूप

❖ संदर्भ-ग्रंथ–सूची

- हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
- हिंदी साहित्य का इतिहास : (सं.) डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा
- हिंदी कवि-सम्मेलनों और मंचीय कवियों का साहित्यिक योगदान : विशेष लक्ष्मी वीणा, प्रगति प्रकाशन, आगरा
- साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका : मैनेजर पांडेय, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, चंडीगढ़
- https://youtu.be/qBAbNPneogc (कवि-सम्मेलन हेतु)
- https://youtu.be/njXO5siZVqo (कवि-सम्मेलन हेतु)

धन्यवाद !